ईश्वरीय खजाना टीम

Presents

समाधान By सूर्य भाई जी (मधुबन)

प्रशन :- "हमें यह भी जानना है की हम बाबा से कैसे रूह-रिहान करें ? उनसे कैसे दृष्टि लें व कैसे वरदान प्राप्त करें। हम चाहते है की प्रतिदिन सवेरे हमें सुन्दर प्रभु मिलन की अनुभूति हो।"

➳ _ ➳ अपनों से कैसे बात की जाती है? जिससे हमारा प्यार होता है, उनसे हम कैसे बात करते है? क्या यह प्रश्न होता है या उनसे बार-बार बातें करने की इच्छा होती है ? क्या हम इन्तजार नहीं करते कि कब मौका मिले और हम उनसे दिल की बातें करें। यदि शिव परमपिता से हम अपनापन बढ़ायें, उनसे हमारा बहुत प्यार हो तो **हम उनसे बातें करते ही रहेंगे**। जो हमें हमारा खोया हुआ राज्य दिलाता है, जो हमें दुःखों से व चिन्ताओं से मुक्त कर देता है, जो हमें शक्तिशाली बना देता है, जो हमें मायाजीत बना देता है, क्या उससे भी हमारा प्यार नहीं होगा। याद करें उसने हमें क्या-क्या दिया ?

➳ _ ➳ **उसे अपना खुदा दोस्त बना लें** और दिल की सब बातें उनसे करें। कभी सच्चे दिल से उनकी महिमा करें..."ओह बाबा! आपने हमारा सोया हुआ भाग्य जगा दिया...आप हमारे लिए स्वर्ग की सौगात लाए। हमने तो कभी सोचा भी नहीं था की तुम हमारे हो जाओगे...तुम हमारा वरदानों से श्रृंगार करोगे...स्वयं सम्मुख बैठकर हमें पढ़ाओगे...ओ प्यारे बाबा! हम तो धन्य-धन्य हो गए। हमने तो सोचा भी नहीं था की आप हमें इस तरह आकर मिलोगे...बाबा आपको पाकर हमारी जन्म-जन्म की प्यास मिट गई। हम पूर्णतः तृप्त हो गए"।

➳ _ ➳ हमें बहुत अच्छा अभ्यास करना है, **प्रतिदिन सूक्ष्मवतन में जाने का**। केवल महसूस करें की मैं वहां हूँ और सामने बापदादा खड़े हैं। बाबा के मस्तक में ज्ञान सूर्य शिवबाबा चमक रहे हैं तथा वे मुझे दृष्टी दे रहे हैं। इसके बाद बाबा ने मेरे सिर पर अपना वरदानी हाथ रख दिया, फिर मस्तक पर तिलक लगाया और वरदान दिए...बच्चे विजयी भव...निर्विघ्न भव...सफलतामूर्त भव। इन तीनों वरदानों को स्वीकार करें और दिन में 3 बार अवश्य याद कर लें की मुझे वरदाता शिवबाबा से ये तीन वरदान मिले हैं। अन्य कोई वरदान भी आप बाबा से लें सकते हैं। जैसे निरोगी भव...मायाजीत भव...क्रोधमुक्त भव...या श्रेष्ठ योगी भव।

➳ _ ➳ इस तरह प्रतिदिन सवेरे यदि अभ्यास करेंगे तो प्रभु-मिलन का अनुभव होगा। **रोज सवेरे आत्म-संतुष्टि होगी और जीवन निर्विघ्न हो जाएगा**।

ईश्वरीय खजाना टीम

Presents

तीव्र पुरुषार्थ By सूर्य भाई जी (मधुबन)

विषय :- "ज्ञानी शांत चित्त आत्मा"

➳ _ ➳ ज्ञानी आत्मा वही है जो अपने **चित को शांत रखें**, जो अपने मन को नेगेटिव से पॉजिटिव करके जल्द ही प्रसन्न कर दें। ज्ञानी आत्मा वह नहीं जो किसी

नेगेटिविटी के बहाव में, व्यर्थ संकल्पो के बहाव में तेजी से बहती जाएँ। बातें तो आती है और चली जाती है। परिवारों में भी अनेक चीजे मनुष्य के साथ होती है।

➳ _ ➳ ऐसा तो नहीं होगा की जैसा हम चाहते है वैसा ही हम करें या वैसा ही सब कुछ होता रहे, **ऐसा तो ड्रामा का विधान ही नहीं है**। किसी के बच्चे नेगेटिव हो गए है, गलत मार्ग पर चले गए है। किसी के बच्चे माँ-बाप से गलत व्यवहार कर रहे है, जरा भी सुनते नहीं तो माँ-बाप बहुत परेशान रहते है।

➳ _ ➳ तो हमें एक सत्य बात जान लेनी चाहिए की अगर हम परेशान रहते है तो हमारे बोल में प्रभाव नहीं रहता है। तब हमारी कोई नहीं सुनता है, और जब कोई नहीं सुनता तो मनुष्य और इरिटेट होता है और उसकी स्थिति बिगड़ती जाती है। इसलिए कुछ समय के लिए अपने मन को शांत करें, **साक्षीभाव अपना लें**।

➳ _ ➳ **सब आत्माओ का अपना-अपना पार्ट है।** ठीक है वह आपके बच्चे है, आपके प्रियजन है, उन्हें अच्छा होना ही चाहिए, उन्हें बिगड़ता देख, उनका पतन देख किसी को भी प्रिय नहीं लगेगा, लेकिन आप इस तरह कुछ नहीं कर पाएंगे।

➳ _ ➳ याद रखेंगे, **चित शांत होते ही परिस्थितियां भी शांत होने लगेंगी**। आपकी शुभ भावना में बल तब रहेगा जब आपके विचार महान होंगे, जब आप स्वमान में स्थित होंगे। यदि परेशान होकर आप किसी को अच्छी शिक्षाएं भी देते है तो वह शिक्षाएं भी निरर्थक जाती है।

➳ _ ➳ सुनने वाला यही सोचता है, उनका तो काम ही है बोलते रहना। उन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए स्वमान को बढ़ाते चलें। विशेष स्वमान - "मैं विश्व कल्याणकारी हूँ"। देखिये जिन्हे विश्व का कल्याण करना है, वह छोटे नहीं हो सकते, **वह बहुत बड़े होंगे**।

➳ _ ➳ विश्व कल्याण! मनुष्य अपना भी कल्याण नहीं कर पाता है, मनुष्य दूसरे एक व्यक्ति का भी कभी-कभी कल्याण नहीं कर पाता है। और हम चलें है विश्व का कल्याण करने। तो कितनी ऊँची स्थिति होनी चाहिए, हम अपने इस स्वमान को बढ़ातें चलें, **"मैं विश्व कल्याणकारी हूँ"**।

➳ _ ➳ दूसरा स्वमान - "मैं वही हूँ, जिनकी मंदिरों में पूजा हो रही है, मैं इष्ट देव-देवी हूँ", क्या इष्ट देव-देवी को कभी आपने परेशान होते हुए देखा है? "इष्ट देव-देवी हूँ,

जिनके सामने आते ही, जिनके मंदिरों के कबाड़ खुलते ही, लोगों में प्रसन्नता की लहर छा जाती है, जिनके दर्शन करने से लोगों के चित शांत और पवित्र हो जाते है, **वह देवी मैं हूँ**।

➳ _ ➳ इस स्वमान को बढ़ाएंगे तो आपका मन बहुत शांत रहेगा और यह जो मन में उथल-पुथल होती है, जो बैचैनी होती है, चिंताएं होती है की पता नहीं क्या होगा? यह **चिंता समाप्त हो जायेगी**।

➳ _ ➳ आप यह संकल्प को सदा के लिए हटा दें, पता नहीं क्या होगा? ज्ञानी आत्माओ का यह संकल्प नहीं होना चाहिए, **होगा वही जो विधि में, ड्रामा में पहले से ही नूँध है**। जिसे लोग कहते है, लिखा हुआ है। ऐसा अभ्यास करने से अपने चित को शांत रखेंगे और आज सारा दिन एक बहुत सुन्दर प्रैक्टिस करेंगे और वह है बापदादा का आह्वाहन।

➳ _ ➳ बाबा को निमंत्रण देंगे परमधाम में और फिर देखेंगे बाबा अपना धाम छोड़कर निचे आ रहे है, ब्रह्मा तन में प्रवेश करते है और फिर दोनों निचे आते है मेरे पास, बाबा मेरे सामने है मुझे दृष्टि देते है और **बाबा ने अपने हजार भुजाएं मेरे सर के ऊपर फैलादि है**।

➳ _ ➳ बहुत सुन्दर अभ्यास होगा जैसे उनकी छत्र-छाया, हाथों की छत्र-छाया मेरे सर पर है और बाबा की आवाज़ सुनें, "बच्चे! तुम चिंता ना करों, इन सब का जिम्मेदार मैं हूँ, **मैं सब कुछ ठीक करने वाला हूँ**, मेरी शक्तियों में विश्वास रखो"। यह अभ्यास हर घंटे में एक बार आज अवश्य करेंगे।

ईश्वरीय खजाना टीम द्वारा संचालित

राजयोग मेडिटेशन कोर्स

सीखने के लिए

इस **WhatsApp No.** पर

+91 9352275856

ॐ शान्ति लिखकर भेजें